अथर्ववेद संहिता

(सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

भाग–२

(काण्ड ११ से २० तक)

सम्पादक

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Scanned with CamScanner

४३२०. सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊ षु नृतमाय धृष्णवे ॥३७ ॥

हे मित्रो ! स्तोत्रों से, वज्र धारण करने वाले इन्द्रदेव की स्तुति करते हुए, हम उनसे आशीर्वाद की याचना करते हैं। श्रेष्ठ वीर तथा शत्रुओं को पराजित करने वाले इन्द्रदेव की, आप सभी के कल्याण के लिए हम स्तुति करते हैं ॥३७ ॥

४३२१. शवसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा । मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि ॥३८ ॥

हे मित्र याजको ! वज्र धारण करने वाले इन्द्रदेव के निमित्त हम स्तुति पाठ करते हैं । आप भी उन रिपुसंहारक तथा महान् नायक इन्द्रदेव की भली प्रकार से प्रार्थना करें ॥३८ ॥

४३२२. स्तेगो न क्षामत्येषि पृथिवीं मही नो वाता इह वान्तु भूमौ ।
मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो अग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् ॥३९ ॥

जिस प्रकार वर्षाकाल में मेढक पृथ्वी को छोड़कर जल में छलाँग लगाता है, उसी प्रकार आप भी विस्तृत भू-भाग को लाँघकर ऊपर की ओर गमन करें । वायुदेव, अग्नि के सहयोग से हमारे निमित्त सुखकारक बनकर बहें । प्राणि- समुदाय के सखारूप मित्रदेव और वरुणदेव अग्नि द्वारा घास को पूर्णरूप से भस्मसात् करने के समान ही हमारे दुःख और कष्टों को दूर करें ॥३९ ॥

४३२३. स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहत्नुमुग्रम् ।
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्मत् ते नि वपन्तु सेन्यम् ॥४० ॥

हे स्तोताओ ! यशस्वी रथ में विराजमान तरुण सिंह के समान भय उत्पन्न करने वाले, शत्रुसंहारक, बलशाली रुद्रदेव की स्तुति करो । हे रुद्रदेव ! आप स्तोताओं को सुखी बनाएँ तथा आपकी सेना शत्रुओं का संहार करे ॥४० ।

४३२४. सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ॥४१ ॥

दैवी गुणों के इच्छुक मनुष्य, देवी सरस्वती का आवाहन करते हैं । यज्ञ के विस्तारित होने पर वे देवी सरस्वती की ही स्तुति करते हैं । श्रेष्ठ पुण्यात्माओं द्वारा देवी सरस्वती के आवाहन किये जाने पर, वे दानियों की आकांक्षाओं को परिपूर्ण करती हैं ॥४१ ॥

४३२५ सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे ॥४२ ॥

हमारे आवाहन पर दक्षिण दिशा से आने वाले सभी पितर जिन माँ सरस्वती को पाकर संतुष्ट होते हैं । वे माता सरस्वती हमारे इस पितृयज्ञ में उपस्थित हों । हम उनका आवाहन करते हैं । वे प्रसन्नतापूर्वक हमें उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने वाला अन्न प्रदान करें ॥४२ ॥

४३२६. सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ॥४३ ॥

हे सरस्वती देवि ! जो आप स्वधायुक्त अन्न द्वारा परितृप्त होती हुई पितरजनों के साथ एक ही रथ पर आगमन करती हैं । आप मनुष्यों को परितृप्त करने वाला अन्न भाग और वैभव-सम्पदा, हम साधकों को प्रदान करें ॥४३ ॥

४३२७. उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥४४ ॥

Scanned with CamScanner